25

''मनुष्य जो कुछ बोता है''

2 शमूएल 11-16; 18

संसार की बनावट में पाए जाने वाले सिद्धांतों में से एक सिद्धांत गलातियों 6:7, 8 में मिलता है:

> धोखा न खाओ, परमेश्वर ठट्ठों में नहीं उड़ाया जाता, ज़्योंकि मनुष्य जो कुछ बोता है, वही काटेगा। ज़्योंकि जो अपने शरीर के लिए बोता है, वह शरीर के द्वारा विनाश की कटनी काटेगा; और जो आत्मा के लिए बोता है, वह आत्मा के द्वारा अनन्त जीवन की कटनी काटेगा।

चाहो तो विश्वास कर लो; बोना है, तो काटना भी। आप वैसा ही काटेंगे, बल्कि जितना बोया है उससे अधिक ही काटेंगे। बोने और काटने के यही नियम हैं, और एक बार बो लिया, तो इस प्रक्रिया को रोकने का हमारे पास कोई तरीका नहीं है। यही नियम है। ''मनुष्य जो कुछ बोता है, वैसा ही काटेगा भी।'' जैसे एक लेखक ने कहा है, ''क्षमा के बावजूद।''

कई बार हम अपने बच्चों पर यह प्रभाव छोड़ते हैं कि ''सॉरी'' कह देने से सब कुछ ठीक हो जाता है। या, बड़े होकर वे परमेश्वर से ''सॉरी'' कह दें और वह उनके पाप को ऐसे भूल जाएगा जैसे उन्होंने कभी पाप किया ही न हो। या, यदि यह ''सचमुच कोई पाप बुरा'' है तो वे प्रचारक के कहने पर कलीसिया केसामने ''सॉरी'' कह दें तो किसी पश्चाताप की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। हम अपने बच्चों को यह बताने में नाकाम रहते हैं कि यदि आप पाप करते हैं तो क्षमा मिलने के बावजूद उसके परिणाम से नहीं बच सकते। आप रात को सो नहीं पाएंगे। लोग आप पर भरोसा नहीं करेंगे। उसकी कटनी काटनी ही पड़ेगी।

मेरे दज़्तर में अज़्सर ऐसे लोग मिलते हैं, जो कहते हैं, ''यह अच्छी बात नहीं है! मैंने अपने पति (या पत्नी) से सॉरी कह दिया। इसके बावजूद वह मुझ पर भरोसा नहीं करता (या करती)!'' या ''मैंने अपने पाप का अंगीकार करके कलीसिया से प्रार्थना करने के लिए भी कहा। फिर भी कुछ लोग मुझे ग्रहण नहीं करते। यह अच्छी बात नहीं है!'' बार-बार मैं उन्हें याद दिलाता हूं, कि क्षमा के बावजूद ''मनुष्य जो कुछ बोता है, वही काटेगा भी।''

यदि आप की किसी मित्र से इतनी जबर्दस्त लड़ाई हुई हो जिससे आपकी बाजू टूट गई, तो उससे सुलह करने के बावजूद, आपकी बाजू तो टूटी ही मानी जाएगी। आपको उसे बंधवा कर या पलस्तर करवा कर स्लिंग तो पहननी ही पड़ेगी।

दाऊद के जीवन से बढ़िया इसका उदाहरण नहीं हो सकता। पिछले पाठ में हमने जोर बोने पर दिया गया था जिसमें दाऊद ने बतशेबा के साथ व्यभिचार किया, कपटी जैसा काम किया, बतशेबा के पति को मरवाया। इस पाठ में जोर अगले वर्षों में उसकी कटनी पर होगा।

''मनुष्य जो कुछ बोता है'' (2 शमू. 11; 12)

आइए थोड़ा पृष्ठभूमि पर विचार करते हैं; फिर हम दाऊद की भयानक कटनी की कहानी की ओर बढ़ेंगे।

आइए 2 शमूएल 3 अध्याय में चलते हैं। 2 शमूएल 3 अध्याय के समय, दाऊद केवल यहूदा के गोत्र पर राज्य कर रहा था। हेब्रोन उसकी राजधानी था। आयत 2 में हम पढ़ते हैं, ''और हेब्रोन में दाऊद के पुत्र उत्पन्न हुए; उसका जेठा बेटा अम्नोन था, जो यिज्रेली अहीनोअम से उत्पन्न हुआ था।'' अहीनोअम दाऊद की दूसरी पत्नी का नाम था (पहली पत्नी, मीकल की कोई संतान नहीं थी)। आयत 3 में हम पढ़ते हैं, ''और उसका दूसरा किलाब था, जिसकी मां कर्मेली नाबाल की स्त्री अबीगैल थी।'' अबीगैल दाऊद की तीसरी पत्नी थी (आपको वह नाबाल अर्थात मूर्ख की बुद्धिमान पत्नी के रूप में याद रहेगी)। आयत 3 जारी रहती है, ''तीसरा अबशालोम, जो गशूर के राजा तल्मै की बेटी माका से उत्पन्न हुआ था।'' आयत केइस भाग में एक और पत्नी माका का उल्लेख है, जो सीरिया में गशूर की एक मूर्तिपूजक राजकुमारी थी। उसके पिता तल्मै की ओर ध्यान दें; उसके बारे में हम बाद में और बात करेंगे। आयत 4 और 5 में, हम तीन और बेटों के बारे मे पढ़ते हैं, जो अलग-अलग पत्नियों से हुए थे! अभी, दो बेटों अर्थात सबसे बड़े बेटे अम्नोन (आयत 2), और तीसरे बेटे अबशालोम (आयत 3) पर ध्यान देते हैं।

क्योंकि यह पाठ इनमें से दूसरे, अर्थात अबशालोम पर केंद्रित होगा, इसलिए आइए उसकी पृष्ठभूमि जानने के लिए 2 शमूएल 14 अध्याय में चलते हैं। 25 और 26 आयतें बाइबल में शामिल की गईं अबशालोम पर रंगीन व्याख्या हैं। आयत 25 कहती है, ''समस्त इस्राएल में सुंदरता के कारण बहुत प्रशंसा योग्य अबशालोम के तुल्य और कोई न था; वरन उसमें नख से सिख तक कुछ दोष न था।'' (इस प्रकार मुझे केवल मेरी मां ही बुलाती थी!) जब दाऊद ने उसे देखा, तो उसके दिल की धड़कन यह सोचकर कुछ तेज हो गई कि, ''विश्वास नहीं होता कि मेरे द्वारा एक ऐसा सुंदर और शक्तिशाली नौजवान संसार में आया है!''

आयत 26 कहती है, ''और वह वर्ष के अंत में अपना सिर मुंडवाता था (उसके बाल उसको भारी जान पड़ते थे, इस कारण वह उसे मुंड़ाता था); और जब-जब वह उसे मुंड़ाता तब-तब अपने सिर के बाल तौलकर राजा के तौल के अनुसार दो सौ शेकेल भर पाता था।'' दो सौ शेकेल सवा से दो किलो के बीच होगा। तुलना के लिए इस्तेमाल करने के लिए मुझे कोई ऐसी चीज नहीं मिली जो सवा से दो किलो के बीच में हो परन्तु मुझे एक किलो दाल का एक पैकेट मिला है; जो काफी भारी है।[1] मैं समझता हूं कि अबशालोम अपने भारी

बाल ज़्यों कटवाता था परन्तु ज़्या यह जानना दिलचस्प नहीं है कि वह उनका वजन करवाता था? पिछली बार जब आपने बाल कटवाए थे तो ज़्या आप ने उन्हें तौला था? अबशालोम के अहंकार का पता चलता है। उसे अपने सुंदर, लंबे, घने काले यहूदी बालों पर घमंड था।

वह एक सुंदर नौजवान था! मैं कल्पना करता हूं कि जब वह छोटा था तो दाऊद से उसके पास से गुजरते हुए हर बार, रुककर उसके सिर पर हाथ फेरता और कहता था, ''तू कितना सुंदर है!''

आइए कुछ वर्ष आगे बढ़ते हैं। हेब्रोन में सात साल के बाद, दाऊद ने यरूशलेम पर कब्ज़ा करके इसे अपनी राजधानी बना लिया था। 2 शमूएल 5:13 में हम पढ़ते हैं, ''जब दाऊद हेब्रोन से आया तब उसके बाद उसने यरूशलेम की और रखेलियां[2] [हम उनमें से कम से कम दस को जानते हैं[3]] रख लीं, और पत्नियां बना लीं और उसके और बेटे-बेटियां उत्पन्न हुए।'' 14 से 16 आयतों में ग्यारह और पुत्रों के नाम हैं। दाऊद का वंश-वृक्ष ऊपर से भारी हो रहा था पर कुछ फल खराब होने लगा था।

पिछले पाठों में हमने राजा के रूप में, विजयी योद्धा के रूप में, बुद्धिमान राजनयिक के रूप में, समझदार प्रबंधक के रूप में और परमेश्वर के आराधक के रूप में उसके आरज़्भिक दिनों में दाऊद की सफलता को देज़ा है। एक बात जो हमने नहीं देखी वह दाऊद का पारिवारिक व्यज़्ति होना है। उसके पास विवाह करने तथा बच्चे जनने का समय था परन्तु उन बच्चों को आकार देने और ढालने का समय नहीं था।

अंत में, 2 शमूएल 11 में दाऊद का कुछ वंश-वृक्ष बन चुका था। परन्तु उस समय का इस्तेमाल अपने परिवार के साथ करने के बजाय उसने इधर-उधर घूमकर समय बिताकर किया जिसमें उसने एक सुंदर स्त्री को नहाते हुए देखा। उसके साथ व्यभिचार करने के बाद, पाप पर पाप होता गया। यह उस व्यज़्ति के जीवन की जिसने अपना पूरा जीवन परमेश्वर को समर्पित किया था, एक दोपहर थी, जो बेलगाम वासना से भरी थी। ज़्या यह सत्य है कि ''मनुष्य जो कुछ बोता है, वही काटेगा भी''? ज़्या यह सत्य है कि वह वैसा ही काटता है? ज़्या यह सत्य है कि वह उससे भी अधिक काटता है? आइए कहानी में आगे देखते हैं।

पिछले पाठ में, हमने नाटकीय दृश्य देखा था जिसमें नातान नबी ने दाऊद से कहा था, ''तू ही वह मनुष्य है!'' (2 शमूएल 12:7)। हमने दाऊद के पश्चाताप को देखा था जब वह पुकार उठा था, ''मैंने यहोवा के विरुद्ध पाप किया है'' (2 शमूएल 12:13क)। भजन संहिता 51 में हमने दाऊद की निराशा की गहराई को और भजन संहिता 32 में नातान द्वारा आश्वासन मिलने पर कि ''यहोवा ने तेरे पाप को दूर किया है; तू न मरेगा'' (2 शमूएल 12:13ख) उसके मन के आनंद को देखा था। ज़्या परमेश्वर के अनुग्रह को देखना अद्‌भुत नहीं लगा चाहे पुराने नियम में ही हो? ''तू न मरेगा। तुझे पत्थरवाह करके मारा नहीं जाएगा, जो कि व्यवस्था के अधीन व्यभिचार तथा हत्या का दंड है। तू जीवित रहेगा!'' दाऊद के मुंह से निकले सात शज़्द (अंग्रेज़ी में छह): ''मैंने यहोवा के विरुद्ध पाप किया है।'' इसके साथ दाऊद ने मामले को सुलझा लिया था। उसे कोई परेशानी नहीं थी। सब कुछ पहले जैसा ही था।

नहीं।

सब कुछ पहले जैसा नहीं था।

''मनुष्य जो कुछ बोता है, वही काटेगा भी''–चाहे क्षमा मिल भी जाए।

''वही काटेगा'' (2 शमू. 12-19)

12:10 में दाऊद से कहे नातान के शब्द देखें: ''इसलिए अब तलवार तेरे घर से कभी दूर न होगी।'' 12:11 में विशेष उदाहरण पर ध्यान दें: ''यहोवा यों कहता है, कि सुन, मैं तेरे घर में से विपत्ति उठाकर तुझ पर डालूंगा; और तेरी पत्नियों को तेरे साम्हने लेकर दूसरे को दूंगा, और वह दिन दुपहरी में तेरी पत्नियों से कुकर्म करेगा।''

मैं दाऊद का उज़र सुन सकता हूं: ''हे प्रभु, जरा रुकना। यह ठीक नहीं होगा! मुझे तो आपने क्षमा कर दिया है। मैंने जादुई शब्द कहे थे। मैंने वही किया जो मुझे करना चाहिए था। 'तलवार मेरे घर से कभी दूर न होगी' से आपका क्या *भाव* है?''

''इसका अर्थ वही है जो मैंने कहा है। मनुष्य जो कुछ बोता है, वही काटेगा–क्षमा के बावजूद।''

पाप का दोष हट जाने के बावजूद, उसके परिणाम रहते ही हैं। क्या पाप के बारे में हम इस बात को समझते हैं? पाप कोई मामूली बात नहीं है। हम यह नहीं कह सकते, ''चिंता की कोई बात नहीं है। अभी देख लेता हूं।'' दाऊद के जीवन के हजारों दिनों के बीच एक शाम थी, केवल एक शाम, परन्तु इसके परिणाम सालों साल चलते रहे।

12:10 में ''घर'' और आयत 11 में ''घर'' (अंग्रेज़ी में घराना–अनुवादक) शब्द पर ध्यान दें: ''तलवार तेरे घर से कभी दूर न होगी, ... मैं तेरे घर (अंग्रेज़ी में घराना–अनुवादक) से विपत्ति उठाकर तुझ पर डालूंगा।'' घर पर निरंतर आक्रमण होते हैं। कुछ तूफान बाहर से आते हैं; मजबूत घर इन तूफानों का सामना कर सकता है। घर का नाश करने वाले तूफान भीतर से ही आते हैं। दाऊद के पाप के कारण, उसके घराने से ही उठने वाले तूफानों के कारण नाश होना था।

हमने पिछले पाठ में पहले परिणाम पर ध्यान दिया था, जिसमें दाऊद और बतशेबा के अपवित्र मिलन से उत्पन्न हुए बेटे की दुखद मृत्यु हो गई। आइए जारी रहने वाले परिणामों को देखने के लिए 2 शमूएल 13 में चलते हैं।

बलात्कार (2 शमू. 13:1–19)

अध्याय 13 के पहले भाग वाली कहानी मुझे बाइबल की सबसे दुखद कहानियों में से एक लगती है। शायद इसलिए कि मेरी तीन बेटियां हैं। आज घटनाएं प्रचारित करके उन्हें दस्तावेजों के रूप में बनाकर वास्तविक घटना के आधार पर बनी कहानी के रूप में टीवी पर दिखाया जाता है। यह पाप के विषय में ऐसी नापसंद कहानी है कि हम इसके बारे में सोचना तो क्या बात भी करना पसंद नहीं करते। तौभी हमें पाप के परिणामों के बारे में यहां एक सबक मिलता है। आइए जल्दी से इस कहानी को देखते हैं।

अध्याय आरम्भ होता है, ''इसके बाद तामार नाम एक सुन्दरी जो दाऊद के पुत्र अबशालोम की बहिन थी'' (13:1क)। अध्याय 3 के बाद अबशालोम के बारे में हम पहली बार यहां पढ़ते है। लगभग बीस साल बीत गए थे। दाऊद, इतनी देर तुम कहां थे? ''मैं सेना को आदेश दे रहा था। मैं सरकारी कामों में व्यस्त था। मैं विवाह करने और बच्चे पैदा करने में लगा था।'' दाऊद, तुम उस परिवार *के साथ* ज़्या कर रहे थे? अपने परिवार के साथ तुज़्हारा सज़्बन्ध कैसा है? स्पष्टतया अपने परिवार के साथ उसका कोई सज़्बन्ध नहीं था।

बतशेबा के साथ पाप करने से पहले, जब दाऊद ने आज्ञा दी, तो उसे माना गया था। सबके मन में उसके प्रति सज़्मान था। अब बहुत हद तक उसने वह सज़्मान खो दिया था। विशेषकर अपने बच्चों के मन में। बच्चों के लिए वह एक पिता के बजाय जिसकी आज्ञा माननी आवश्यक थी, वह एक चालबाज राजा था।

''तामार[4] नाम एक सुन्दरी ... दाऊद के पुत्र अबशालोम की बहन थी।'' दाऊद के दूसरे सब पुत्र और पुत्रियां अबशालोम के सौतेले भाई-बहन थे। तामार नामक सुन्दरी, अबशालोम की सगी बहन थी।[5]

आयत 1 में आगे मिलता है: ''उस पर दाऊद का पुत्र अज़्नोन मोहित हुआ।'' अध्याय 3 के बाद अज़्नोन के बारे में पहली बार पढ़ने को मिलता है। याद रखें, अज़्नोन दाऊद का सबसे बड़ा पुत्र था, स्पष्टतया वह सिंहासन पर बैठने के लिए उसका उज़राधिकारी, राजकुमार था। ''... अज़्नोन [तामार पर] मोहित हुआ।'' यह ''मोहित'' होना ''आओ प्यार करें''[6] वाज़्यांश के अर्थ में था। अज़्नोन अपनी सौतेली बहन तामार के लिए *वासना* की आग में जल रहा था। वह उसे इतना चाहता था कि इस कारण वह बीमार पड़ गया, परन्तु उसे समझ नहीं आ रहा था कि वह ज़्या करे। राजा की कुआंरी पुत्री के रूप में, तामार को ताले में बंद रखा गया था और ताले की कुंजी महल में किसी दूसरी जगह रखी गई थी।[7]

''अज़्नोन के योनादाब नाम एक मित्र था''[8] (13:3)। यदि आप गलत काम करना चाहते हैं, तो ''एक मित्र'' ढूंढ़ना कठिन नहीं है जो आपको वह करने के लिए प्रोत्साहित करे, और शायद आपको यह भी बता दे कि वह कैसे करना है।[9] योनादाब ने अज़्नोन से कहा, ''हे राजकुमार, ज़्या कारण है कि तू प्रतिदिन ऐसा दुबला होता जाता है?'' (13:4)। अन्य शज़्दों में, ''राजा के उज़राधिकारी राजकुमार होने पर भी तू प्रसन्न ज़्यों नहीं है? प्रसन्न होने के लिए तुझे ज़्या चाहिए? मैं बताता हूं कि तुम उसे कैसे पा सकते हो।''

देखें कि उन्होंने दाऊद के साथ कैसे चालाकी की। अज़्नोन के योनादाब से यह कहने के बाद कि वह ज़्यों परेशान है, योनादाब ने कहा:

> अपने पलंग पर लेटकर बीमार बन जा; और जब तेरा पिता तुझे देखने को आए, तब उससे कहना, मेरी बहिन तामार आकर मुझे रोटी खिलाए, और भोजन को मेरे साज़्हने बनाए, कि मैं उसको देखकर उसके हाथ से खाऊं (13:5)।

अज़्नोन ने योनादाब की सलाह मान ली। जब दाऊद ने अपने उज़राधिकारी के बारे में पूछा, तो अज़्नोन ने योनादाब द्वारा बताई कहानी दुहरा दी। अज़्नोन के मन में अपने पिता

के प्रति कोई सम्मान नहीं था ज़्योंकि राजा अपनी इच्छा की पूर्ति के लिए किसी का भी शोषण कर सकता था। जब आप पिता का फर्ज नहीं निभाते, तो दूसरों के लिए आपका इस्तेमाल करना आसान हो जाता है। पिता का फर्ज न निभाने वाले लोगों को अपनी गल्तियों का पता होता है और वे चाहते हैं कि उनके बच्चे उन्हें पसन्द करें जिस कारण उनके साथ छल होना बड़ी बात नहीं है।

दाऊद ने अम्नोन की बिनती मानकर तामार को उसके लिए भोजन तैयार करने के लिए अम्नोन के कमरे में जाने की आज्ञा दे दी।[10] परन्तु तामार द्वारा तैयार भोजन को, उसने खाने से इनकार कर दिया। उसने सब लोगों को बाहर निकाल दिया, और तामार को अपने हाथों से उसे खिलाने के लिए अपने शयनकक्ष में भोजन ले जाने को कहा। जब वह भोजन लेकर आ गई, तो उसने उसे पकड़ कर बिनती की, ''हे मेरी बहिन, आ, मुझसे मिल'' (13:11)। वह डर गई और उससे अपनी वासना पर काबू पाने की बिनती करने लगी।[12] ''परन्तु उसने उसकी न सुनी।'' बल्कि ''उससे बलवान होने के कारण उसके साथ कुकर्म करके उसे भ्रष्ट किया'' (13:14)। इस प्रकार उसने अपनी ही बहन का बलात्कार किया।

''तब अम्नोन उससे अत्यन्त बैर रखने लगा; यहां तक कि यह बैर उसके पहिले मोह से बढ़कर हुआ। तब अम्नोन ने उससे कहा, उठकर चली जा'' (13:15)। नौजवान स्त्रियो, इन शब्दों को सुनो, और मन में बिठा लो। कोई आदमी आप से शारीरिक सम्बन्ध बनाने के लिए ''प्रेम'' की बात कह सकता है, परन्तु अपना काम निकल जाने के बाद वह आपसे घृणा करेगा। विवाह के बन्धन में शारीरिक सम्बन्ध एक अच्छी बात है (उत्पत्ति 2:23-25; इब्रानियों 13:4); उसके बिना, यह सम्बन्ध आप के लिए दुखदायक और कुरूप हो सकता है।

तामार उसके पैरों में गिड़गिड़ाती हुई कहने लगी कि वह उसको न छोड़े परन्तु उसने उसकी न सुनी, बल्कि अपने सेवक से कह दिया, ''इस स्त्री ['' तामार'' नहीं, ''मेरी बहन'' नहीं, बल्कि ''इस स्त्री''] को मेरे पास से बाहर निकाल दे, और उसके पीछे किवाड़ में चिटकनी लगा दे'' (13:17)। तामार अपने कपड़े फाड़कर जो उसके कुआंरेपन के प्रतीक[12] थे, बिलखती हुई चली गई।[13]

''अम्नोन, तुझे किसने बताया कि राजा का पुत्र होने के कारण, तू किसी ज़ी स्त्री को उठा सकता है? तुझे किसने बताया कि वासना पर काबू नहीं बल्कि उसे संतुष्ट करना चाहिए?'' अम्नोन शायद मुस्कराकर उज़र देगा, ''अपने पिता से।'' जैसा बाप, वैसा बेटा।

तलवार दाऊद के घर से कभी नहीं उठी।

जब इस जघन्य अपराध का पता दाऊद को चला तो उसने ज़्या किया? 13:21 पर नजर डालें: ''जब ये सब बातें दाऊद राजा के कान में पड़ीं, तब वह बहुत झुंझला उठा।''[14] उसने अम्नोन को सुधारा नहीं; उसने तामार को तसल्ली नहीं दी; उसने सबको बुलाकर समस्या का समाधान नहीं किया। वह जैसे पागल हो गया। अम्नोन को वह कैसे सुधार सकता था जबकि अम्नोन ने उसी की किताब के एक पन्ने की नकल की थी?

''मनुष्य जो बोता है वही काटेगा''-क्षमा के बावजूद।

बदला (2 शमू. 13:20-36)

जब तामार के सगे भाई, अबशालोम को पता चला कि ज़्या हुआ है, तो उसने निश्चय कर लिया कि अज़्नोन को इसका दण्ड अवश्य देगा। उसने तामार से पूछा, ''ज़्या तेरा भाई अज़्नोन तेरे साथ रहा है?'' मुझे नहीं पता कि अबशालोम को अज़्नोन पर संदेह ज़्यों था। ज़्या उसे अज़्नोन की आंखों में वासना दिखाई दी थी? ज़्या उसने अफवाह सुनी थी? मैं तामार को सिर हिलाते हुए, रोते, बोलने में असमर्थ देखता हूं। अबशालोम ने कहा, ''परन्तु अब, हे मेरी बहिन, चुप रह'' (13:20)। कलंकित हुई तामार अबशालोम के घर में एकांत में रही।

''और अबशालोम ने अज़्नोन से भला-बुरा कुछ न कहा, ज़्योंकि अज़्नोन ने उसकी बहिन तामार को भ्रष्ट किया था, इस कारण अबशालोम उस से घृणा रखता था'' (13:22)। अपने भाई के साथ बात किए अबशालोम को दो वर्ष निकल गए। वे एक ही मेज पर खाना खाते और महल में एक दूसरे के पास से गुजर जाते थे, परन्तु अबशालोम ऐसा व्यवहार करता जैसे अज़्नोन हो ही न। यह ऐसा घर था जिसमें एक दूसरे से बातचीत बंद थी। दाऊद अपने बच्चों से बात नहीं करता था; उसके बच्चे एक दूसरे से बातचीत नहीं करते थे। ''*दो वर्ष*'' (13:23) तक उनमें कोई बातचीत नहीं हुई।

इस सारे समय, दिन-ब-दिन अपनी सुन्दर बहन को देख देज़ कर अबशालोम (नोट 2 शमूएल 13:32) मन ही मन कुढ़ता था और सूखता जा रहा था। अबशालोम के मन में बदला लेने की योजना बन रही थी। ''दो वर्ष के बाद अबशालोम ने एप्रैम के निकट बाल्हासोर में[15] अपनी भेड़ों का ऊन कतरवाया और सब राजकुमारों को नेवता दिया'' (13:23)। भेड़ों की ऊन कतरने का समय पर्व का समय होता था[16] और अबशालोम ने दावत में भाग लेने के लिए अपने भाइयों को न्यौता दिया।[17] नि:संदेह, अबशालोम की रुचि एक विशेष भाई अज़्नोन को बुलाने में थी। स्पष्टतय: अज़्नोन ने अबशालोम का न्यौता स्वीकार नहीं किया था, जिस कारण अपने पिता के साथ चाल खेलने के लिए अबशालोम उसके पास गया।

अबशालोम ने दाऊद को दावत पर बुलाया। जब उसने इनकार कर दिया (जैसा कि अबशालोम को पता था कि वह करेगा), तो अबशालोम ने वास्तव में कहा, ''तो फिर राजा बनने वाले अपने पुत्र अज़्नोन को अपनी जगह भेज दो।'' पहले तो दाऊद ने इनकार कर दिया (ज़्या उसे संदेह था?), परन्तु अबशालोम ने उसे दबाया[18] (छलने की एक तरकीब)। आखिर दाऊद अज़्नोन को भेजने के लिए राज़ी हो गया।

जब दावत शुरू हो गई, तो अबशालोम ने अज़्नोन को अधिक पिला दी और अपने सेवकों को उसे मार डालने की आज्ञा दी। एक क्षण में, राजा बनने वाला राजकुमार फर्श पर लहूलुहान हो गया। बाकी राजकुमार अपनी-अपनी जान बचाकर भाग गए।[19]

''अबशालोम, तुझे किसने सिखाया कि किसी को इतनी पिला दो कि वह अपनी रक्षा ही न कर पाए? तुझे किसने बताया कि किसी को मारने के लिए दूसरे का इस्तेमाल किया जाना चाहिए?'' अबशालोम मुस्कराकर उज़र देगा, ''अपने पिता से।'' जैसा बाप, वैसा बेटा।

तलवार दाऊद के घर से कभी दूर न हुई।[20]

भाग जाना (2 शमू. 13:37-14:33)

''अबशालोम तो भागकर गशूर के राजा अम्मीहूर के पुत्र तल्मै के पास गया'' (13:37)। आपको याद है तल्मै कौन था? उसके बारे में हमने अध्याय 3 में पढ़ा था। यह अबशालोम की मां का पिता था। अबशालोम भागकर गशूर के राजा, अपने नाना के पास चला गया। शायद अपने नाना के साथ अबशालोम का कोई विशेष सम्बन्ध था। शायद उसे पिता की आवश्यकता महसूस हुई। शायद वह यरूशलेम से जितना हो सके दूर जाना चाहता था (गशूर उज़र की ओर बहुत दूर था[21])।

तीन साल अर्थात तीन साल का लम्बा अर्सा बीत गया। धीरे-धीरे दाऊद के मन की पीड़ा कम होने लगी, और उसने अम्नोन ''... के विषय में शान्ति पाई'' (13:39ख)। ''और दाऊद के मन में अबशालोम के पास जाने की बड़ी लालसा रही'' (13:39क)। तो फिर वह गया क्यों नहीं? अबशालोम के लिए उसके मन में हमेशा विशेष स्थान रहा था।[22] अब अम्नोन के मृत्यु के बाद, अबशालोम ही उसका सबसे बड़ा बेटा था।[23] दाऊद ने उसके साथ सुलह क्यों नहीं की?

दाऊद, जो पहले से बूढ़ा लग रहा था, ने सिर हिलाकर इतना ही कहा होगा। ''मैं राजा हूं। मुझ में घमंड है। मैं ऐसा नहीं कर सकता।''

इस कारण, कुछ नहीं हुआ।

अध्याय 14 में योआब ने अबशालोम को यरूशलेम में लाकर दाऊद को लज्जित करने का षड्यंत्र रचा।[24] नातान का ढंग अपनाकर, उसने दाऊद के पास एक स्त्री को एक कहानी बताने के लिए भेजा।[25] कहानी उसके एक पुत्र द्वारा दूसरे पुत्र को मारने की थी[26], और अबशालोम द्वारा अम्नोन की हत्या करने से मेल खाती थी। उसकी कहानी से भावुक होकर, दाऊद ने दूसरे पुत्र को मारने वाले पुत्र को क्षमा कर दिया। उस स्त्री ने वास्तव में कहा, ''मैं असल में अबशालोम की बात कर रही हूं। समस्त इस्राएल उसे वापस लाना चाहता है। तू उसे क्षमा करके घर क्यों नहीं लाता?''

विचलित हुए दाऊद ने योआब से कहा, ''सुन, मैं ने यह बात मानी है; तू जाकर अबशालोम जवान को लौटा ला'' (14:21)। ''और योआब उठ कर गशूर को गया, और अबशालोम को यरूशलेम ले आया'' (14:23)।

परन्तु दाऊद द्वारा दिए हृदय-विदारक निर्देशों पर ध्यान दें: ''वह अपने घर जाकर रहे; और मेरा दर्शन न पाए'' (14:24)। यह वही पुत्र था जिससे दाऊद मिलना चाहता था (2 शमूएल 13:39)। यह वही पुत्र था जिसकी ओर ''उसका मन लगा'' था (14:1)। यह वही पुत्र था जिससे दाऊद अत्यन्त प्रेम करता था (2 शमूएल 18:5, 33; तुलना 19:6)। फिर भी उसने कहा, ''उसे वापस ले आ, परन्तु मैं उसे देखना नहीं चाहता।'' दाऊद के तथा उड़ाऊ पुत्र के पिता के अपने बेटे के घर आने के चौंकाने वाले अन्तर पर ध्यान दें: ''वह अभी दूर ही था, कि उसके पिता ने उसे देखकर तरस खाया, और दौड़कर उसे गले लगाया,

और बहुत चूमा'' (लूका 15:20)। पर दाऊद ने कहा, ''उसे अपने घर आने दो और वह वहीं रहे। मैं उसका मुंह नहीं देखना चाहता।''

व्यवस्था के अनुसार दाऊद को हत्या के लिए अबशालोम को पत्थरवाह से मारना चाहिए था, परन्तु उसी व्यवस्था के द्वारा स्वयं दोषी ठहरने वाला दाऊद अपने साथ ऐसा नहीं कर पाया था। दूसरी ओर, यदि दाऊद ने अबशालोम को मारना नहीं था, तो उसे चाहिए था कि वह उसे क्षमा करके महल में पूरा अधिकार दे।[27] दाऊद यह नहीं करना चाहता था, सो उसने कुछ नहीं किया।

''और अबशालोम राजा का दर्शन बिना पाए यरूशलेम में दो वर्ष रहा'' (14:28)। अबशालोम तीन वर्ष तक अपने नाना के पास था। अब वह दो वर्ष तक अपने घर में अकेला रहा। पांच साल तक उसने अपने पिता को नहीं देखा।

अबशालोम ने दबाव डालकर ''मुझे खिलाओ या सौदा करो''[28] वाली परिस्थिति बनाने का फैसला किया। वह चाहता था कि योआब उसकी मध्यस्ता करे, परन्तु योआब ने उसकी बात पर ध्यान नहीं दिया।[29] अबशालोम ने योआब का ध्यान आकर्षित करने के लिए अपने नौकरों को उसके जौ के खेत में आग लगाने के लिए कहा![30] तब योआब अबशालोम की ओर से राजा के पास गया, और अन्त में, पांच साल बाद, दाऊद ने अपने पुत्र को बुला ही लिया। आखिर उन्हें सब कुछ सामने लाने का अवसर मिला। अन्त में वे एक दूसरे से बात करने लगे थे। अन्त में सब बातें शान्ति से की जा सकती थीं। अन्त में वे सुलह करके रह सकते थे। परन्तु 14:33 के अन्त के दृश्य पर ध्यान दें: ''और [अबशालोम] राजा के पास गया, और उसके सम्मुख भूमि पर मुंह के बल गिर के दण्डवत की; और राजा ने अबशालोम को चूमा''। मुझे नहीं मालूम कि आप पर इस दृश्य का क्या असर होता है, परन्तु यह समझकर कि चूमना उस समय का औपचारिक अभिवादन था, मुझे यह बहुत ही नीरस, और नीरस लगता है।

इसे आज के शब्दों में ढालें: लड़का अपने पिता से समय लेने और बात करने का स्थान ढूंढ़ने का प्रयास कितने महीनों से कर रहा था। अन्ततः, लिविंग रूम में वह अपने पिता के सामने खड़ा था। पांव घसीटते हुए वह अपने पिता केसामने नज़रें झुकाए हुए धीरे-धीरे कह रहा था, ''सॉरी, ... डैडी।'' पिता कुछ देर के लिए सोचता है, फिर रूखे ढंग में कहता है, ''ठीक है, ठीक है ... पर ध्यान रहे, आगे से ऐसा नहीं होना चाहिए। ... *जो हुआ उसे भूल जाओ*।''

दाऊद और उसके पुत्र में अभी भी कोई वास्तविक बातचीत नहीं थी।

विद्रोह (2 शमू. 15:1-16:23)

अध्याय 15 में अबशालोम के मन में बनने वाली सारी नाराजगी उसके सिर तक आ गई जब उसने अपने पिता के विरुद्ध षड्यन्त्र का आरम्भ किया। अबशालोम में लोगों के दिल जीतने के लिए[31] चार साल लगा दिए[32]। उसने एक शाही रथ में सवार होकर, जिसके साथ उसकी सेवा तथा रक्षा करने के लिए पचास धावक थे, पूरे देश में भ्रमण करके सब

लोगों की नज़रों में समा गया।[33] (वह अपने आप में एक प्रदर्शन था!) उसने राजा की तराई में,[34] लोगों के सामने अपना नाम रखकर अपने लिए एक स्मारक बना लिया।[35] हर रोज, वह महल के द्वार पर खड़ा हो जाता और राजा के पास न्याय के लिए आने वाले लोगों को भड़काता। बातों और कामों से, उसने लोगों के मन में ये विचार डाल दिए कि ''अपने पिता के उलट, मैं सब लोगों से मिला करूंगा और निष्पक्ष न्याय करूंगा!''[36]

अंत में उसके लिए सिंहासन पर दांव लगाने का उचित समय आ गया। उसने अपनी घोषणा करने का स्थान हेब्रोन को चुना। हेब्रोन एक सही पसन्द था। यह यरूशलेम से कुछ दूरी पर था। तो भी इस्राएली लोगों के मन में इसका विशेष स्थान था। इसके निवासी दाऊद से हेब्रोन की जगह यरूशलेम को राजधानी बनाने के कारण अप्रसन्न थे। इसके अलावा, यह अबशालोम की जन्मभूमि अर्थात अबशालोम के बचपन का नगर था।

ज़्योंकि अबशालोम ने जहां भी वह गया भीड़ को अपनी ओर आकर्षित किया, इसलिए उसने अपने पिता को यह बताकर कि वह एक मन्नत को पूरा करने के लिए हेब्रोन में जाना चाहता है[37] जो उसने उस समय की थी जब वह अपने नाना के साथ रह रहा था,[38] अपनी वास्तविक मंशा छुपा ली। अबशालोम को सीरिया से आए छह से अधिक वर्ष हो चुके थे, इसलिए यह कल्पित कहानी ही थी, परन्तु दाऊद को आसानी से छला जाता रहा।[39] दाऊद ने उससे कहा, ''कुशल क्षेम से जा'' (15:9)। ये शज़्द, जो अपने पुत्र से कहे उसके अंतिम शज़्द थे, इसलिए व्यंग्यात्मक हैं कि अबशालोम के चले जाने के बाद, न उसे, न दाऊद को और न देश को शांति थी।

धावकों को पूरे देश में भेज दिया गया, और हेब्रोन में एक बहुत बड़ी भीड़ जमा हुई। नरसिंगे फूंकते ही, वे सब पुकार उठे, ''अबशालोम हेब्रोन में राजा हुआ'' (15:10)।[40]

''तब किसी ने दाऊद के पास जाकर यह समाचार दिया, कि इस्राएली मनुष्यों के मन अबशालोम की ओर हो गए हैं'' (15:13)। दाऊद का सबसे विश्वासयोग्य सलाहकार, अहीतोपेल भी अबशालोम केसाथ मिल गया।[41] दाऊद का सर्वनाश हो चुका था। तलवार काटती और घाव करती रही।

> तब दाऊद ने अपने सब कर्मचारियों से जो यरूशलेम में उसके संग थे कहा, आओ, हम भाग चलें; नहीं तो हम में से कोई भी अबशालोम से न बचेगा; इसलिए फुर्ती करते चले चलो, ऐसा न हो कि वह फुर्ती करके हमें आ घेरे, और हमारी हानि करे, और इस नगर को तलवार से मार ले (15:14)।

दाऊद ने महल की देखभाल के लिए दस रखैलों को छोड़ दिया; फिर वह और उसके शाही सेवक नगर से चले गए। दाऊद के जीवन का यह सबसे दयनीय समय था:

> तब राजा निकल गया, और उसके पीछे उसका समस्त घराना निकला। ...
> ... सब रहनेवाले चिल्ला चिल्लाकर रोए; और सब लोग [किद्रोन नामक नाले के] पार हुए, और राजा भी पार हुआ, ...

> तब दाऊद जलपाइयों के पहाड़ की चढ़ाई पर सिर ढांपे, नंगे पांव, रोता हुआ चढ़ने लगा; और जितने लोग उसके संग थे, वे भी सिर ढांपे रोते हुए चढ़ गए (15:16, 23, 30)।

भागने के पीछे दाऊद के कई कारण थे। वह परमेश्वर के नगर में लहू नहीं बहने देना चाहता था। वह नगर को सुरक्षित करना चाहता था। परन्तु हमारे पाठ का अर्थ है कि उसके भाग जाने का मुज़्य कारण यह था कि वह डरता था: ''आओ, हम भाग चलें; नहीं तो हम में से कोई भी अबशालोम से न बचेगा; इसलिए फुर्ती करते चले चलो, ऐसा न हो कि वह फुर्ती करके हमें आ घेरे, और हमारी हानि करे, और इस नगर को तलवार से मार ले'' (15:14)।[42] बतशेबा के साथ पाप से पहले दाऊद ऐसा उज़र नहीं देता था।[43] उसका जीवन नियन्त्रण से बाहर था और वह अपने फैसले दूसरों को करने की अनुमति दे रहा था।

कुछ समय बाद ही अबशालोम और उसकी सेना यरूशलेम में चढ़ आई। अबशालोम हैरान रह गया होगा कि विजय इतनी आसानी से मिल गई। उसने युद्ध के बाद की योजना नहीं बनाई थी, उसने लड़ने का सोचा था। उसने अहीतोपेल (अपने पिता के पूर्व और अपने वर्तमान सलाहकार [2 शमूएल 16:23]) से पूछा, ''[आगे] ज़्या करना चाहिए''? (16:20)। अहीतोपेल ने कहा, ''जिन रखेलियों को तेरा पिता भवन की चौकसी करने को छोड़ गया, उनके पास तू जा'' (16:21)। इस काम के द्वारा अबशालोम ने लोगों में तीन बातें दिखानी थीं: राजा के रूप में उसने अपने पिता का स्थान ले लिया है, उसे अपने पिता का भय नहीं है, और उसके और दाऊद के सभी सज़्बन्ध समाप्त हो गए हैं।[44] ''सो उसके लिए भवन की छत के ऊपर एक तज़्बू खड़ा किया गया, और अबशालोम समस्त इस्राएल के देखते अपने पिता की रखेलियों के पास गया'' (16:22)।

बोने और काटने के दो नियम याद रखें: आप वैसा ही काटेंगे, बल्कि उससे भी अधिक काटेंगे। दाऊद का व्यभिचार एक स्त्री से था तो अबशालोम का दस से। दाऊद का व्यभिचार गुप्त में था तो अबशालोम का सार्वजनिक, अर्थात ''सब इस्राएलियों के देखते।'' इस प्रकार दाऊद के पाप के बाद के परिणाम के सज़्बन्ध में सबसे भयंकर भविष्यवाणी पूरी हुई:

> यहोवा यों कहता है, कि सुन, मैं तेरे घर में से विपज़ि उठाकर तुझ पर डालूंगा; और तेरी पत्नियों को तेरे साज़्हने लेकर दूसरे को दूंगा, और वह दिन दुपहरी में तेरी पत्नियों से कुकर्म करेगा (2 शमूएल 12:11)।

मैं अबशालोम को तज़्बू से बाहर छत पर आते देख सकता हूं जब वह भीड़ की ओर देखकर मुस्कराता हुआ विजय में अपने हाथ ऊपर हिलाता है। अपने पिता की हर बात का विरोध करके उसके मन में अपने पिता के प्रति कितनी शत्रुता और नाराजगी थी![45]

मुझे यहां इस जवान विद्रोही से कुछ कहने के लिए रुकना होगा: अबशालोम, यह ठीक है कि तेरे पिता ने पिता होने का अपना फर्ज नहीं निभाया। यह सही है कि उसने तेरी ओर ध्यान नहीं दिया। यह सही है कि वह पाप में खो गया, और अपने पाप को छुपाने के

लिए उसने कई और पाप किए। यह सही है कि उसने तेरे यरूशलेम में लौटने के बाद तुझसे मिलने का कोई प्रयास नहीं किया। परन्तु ज़्या इससे तेरा यह कार्य उचित ठहरता है ?

अबशालोम के चेहरे से हंसी उड़ गई, वह गुर्राता हुआ कहेगा, ''हां, हज़ार बार कहूंगा, हां!''

अबशालोम, ज़रा ध्यान देना। मैं कम से कम अठारह और लड़कों को जानता हूं जो इन्हीं हालात में उसी घर में बड़े हुए और उन्होंने विद्रोह नहीं किया,[46] जो उस षड्यन्त्र के लिए जिज़्मेदार नहीं थे, जो इस बगावत में आगे नहीं थे।

जो बात अबशालोम को समझ नहीं आई वह यह थी कि उसका पिता वही काट रहा था जो उसने बोया था। उसे यह समझ नहीं आई कि यही सिद्धांत उसके अपने जीवन में लागू होंगे। उसे अपनी पसन्द चुनने का अधिकार था; किसी ने उससे जबर्दस्ती यह काम नहीं करवाए थे। अपनी जिज़्मेदारी उसकी अपनी थी। वह किसी दूसरे पर अपने पिता के साथ किए व्यवहार की जिज़्मेदारी नहीं डाल सकता था। गौर से सुनो: जो आप काटोगे, वह, फिर बोओगे!

ज़्या मैंने सही कहा ? मैं आपको यकीन दिलाता हूं, यदि अबशालोम आज यहां खड़ा होता, तो वह कहता, ''आमीन, यह सत्य है!'' कहानी के अंत के बारे में सुनें:

सामना करना (2 शमू. 18:1-33)

अध्याय 18 में दाऊद के सेना ने अबशालोम की सेना का सामना करने की तैयार की। दाऊद ने अपनी सेना के अगुआई करने वालों से कहा, ''मेरे निमिज़ उस जवान अर्थात अबशालोम से कोमलता करना'' (आयत 5)।[47]

लड़ाई शुरू हो गई। बीस हज़ार आदमी मारे गए। विद्रोही जवान अबशालोम को इस बात की कोई परवाह नहीं थी कि कितने लोग आहत हुए हैं, उसे तो केवल राजा बनने की धुन थी। बीस हज़ार लोग एक पुत्र की घृणा और कड़वाहट के कारण मारे गए।

अधिकांश युद्ध एप्रैम के घने जंगलों में लड़ा गया।[48] लड़ाई के दौरान, ''अबशालोम तो एक खच्चर पर चढ़ा हुआ जा रहा था, कि खच्चर एक बड़े बांज वृक्ष की घनी डालियों के नीचे से गया, और उसका सिर उस बांज वृक्ष में अटक गया'' (18:9क)। मैं नहीं जानता कि अबशालोम के मोटे, सुन्दर बाल टहनियों में फंसे, या उसका सिर पेड़ की शाखा में फंस गया। परन्तु किसी न किसी तरह, उसके बाल उलझ गए (वरना वह छूट सकता था)।[49] अंत में, वही सुन्दर बाल जिन पर वह इतना इतराता था उसके नाश का कारण बन गए। ''और वह अधर में लटका रह गया, और उसका खच्चर निकल गया'' (18:9ख)। वह ऊपर की ओर लटक गया, उसके हाथ मृत्यु की पकड़ से छुड़ाने के प्रयास में, शाखाओं में बुरी तरह से छिल गए।[50]

एक सिपाही ने जाकर योआब को अबशालोम की हालत बताई। योआब चिल्ला उठा, ''तू ने यह देखा! फिर ज़्यों उसे वहीं मार के भूमि पर न गिरा दिया?'' (18:11)। आदमी ने सिर हिलाया। ''ज़्योंकि हम लोगों के सुनते राजा ने तुझे और अबीशै और इज़ै को

यह आज्ञा दी, कि तुम में से कोई ज़्यों न हो उस जवान अर्थात अबशालोम को न छूए'' (18:12)।

क्रोध से भरा योआब उस ओर भाग गया जहां अबशालोम था। बतशेबा से दाऊद के दुष्कर्म से पहले योआब ने राजा की किसी आज्ञा को तोड़ने का सोचा भी नहीं होगा। परन्तु अब इस सेनापति ने कोई हिचकिचाहट नहीं दिखाई। उसने अबशालोम के हृदय में तीन भाले मार दिए थे।[51] फिर योआब के दस हथियार ढोने वालों ने अपने भाले अबशालोम के कांपते शरीर में मारे, जिससे वह आदमी कम बहुत बड़ा पिन-गद्दा अधिक लगने लगा।

अबशालोम, मैंने जो तुझे कहा था तूने सुना था? ज़्या तुझे यह अनुमान था कि जब तू अपने पिता के विरुद्ध हिंसक षड्यन्त्र रचेगा तो तेरा ज़्या हाल होगा? ''मनुष्य जो कुछ बोता है वही काटेगा।''

दूतों ने आकर दाऊद को युद्ध का हाल सुनाया। उसने किसी से यह नहीं पूछा कि ''कौन जीता? कौन हारा? कितने लोग मरे?'' बल्कि उसने आने वाले पहले से यही पूछा, ''ज़्या वह जवान अबशालोम कुशल से है?'' (18:29)। जब दूसरा पहुंचा तो दाऊद ने फिर पूछा, ''ज़्या वह जवान अर्थात अबशालोम कल्याण से है?'' (18:32क)। दूसरे दूत ने उज़र दिया, ''मेरे प्रभु राजा के शत्रु और जितने तेरी हानि के लिए उठे हैं, उसकी दशा उस जवान की ही हो'' (18:32ख)। अन्य शब्दों में, ''तेरा पुत्र मर गया है!''

यह तो ऐसा था जैसे अबशालोम के हृदय में लगने वाले भाले दाऊद के मन में जा लगे हों। फिर हमें बाइबल में सबसे दुखद शब्दों में से कुछ मिलते हैं, जो किसी भी विवेकी पिता को के मन में बार बार आते हैं:

> तब राजा बहुत घबराया, और फाटक के ऊपर की अटारी पर रोता हुआ चढ़ने लगा; और चलते चलते यों कहता गया, कि हाय मेरे बेटे अबशालोम! मेरे बेटे, हाय! मेरे बेटे अबशालोम! भला हो कि मैं आप तेरी सन्नी मारता, हाय! अबशालोम! मेरे बेटे, मेरे बेटे! (18:33)।

पिताओ, यदि आप बच्चों को समय नहीं दे रहे हैं, यदि आप पिता का फर्ज नहीं निभा रहे हैं, तो ज़्या आप जानते हैं कि आप अपने बेटों और बेटियों के साथ ज़्या कर रहे हैं? बच्चो, आप के मन में जो अपने माता पिता के प्रति कड़वाहट है, ज़्या आपको अहसास है कि आप भी अपने कार्यों के लिए जिज़्मेदार हैं, और ज़्या आपको यह अहसास है कि आप अपने माता पिता का दिल चीर रहे हैं?

दो या तीन गवाहों के मुख से निकली बात, सत्य मानी जाती है। अबशालोम मेरी दाहिनी ओर है। दाऊद मेरी बाईं ओर है।[52] ध्यान दें कि वे पौलुस की भावना को दिखा रहे हैं: ''मनुष्य जो कुछ बोता है वही काटेगा''-क्षमा के बावजूद।

सारांश

मैं जानता हूं कि हम में से कोई भी सिद्ध नहीं है। मैं जानता हूं कि पूरी कोशिश करने के बावजूद हम पाप कर ही जाते हैं। फिर भी हमें कोशिश करनी चाहिए, कि परमेश्वर की सहायता से जहां तक सज़्भव हो सके परीक्षा से बचें, और अपने मनों से पाप को निकाल डालें। गलतियों 6:7, 8 के संदेश को मन में बिठा लें। दाऊद के पाप तथा उसके परिणामों के संदेश को दिल में बिठा लें। पाप आपका जीवन बर्बाद कर देगा। यह आपको उन लोगों से दूर कर देगा जिनसे आप प्रेम करते हैं। यह आपके जीवन की सबसे मूल्यवान और सुन्दर बातों का नाश कर देगा। हे परमेश्वर हमारी सहायता कर, हम चाहे माता पिता हों या बच्चे, हमे वैसे ही बना जैसे हमें होना चाहिए!

अंत में, मैं फिर से ज़ोर देता हूं कि यद्यपि हम अपने पापों के सहपरिणामों को नहीं मिटा सकते, परन्तु परमेश्वर हमारे दोष को मिटा देगा, फिर हमें उन परिणामों को सहने की सामर्थ देगा, यदि हम अपने आप को दीन बनाकर उसकी ओर लौटते हैं। यदि आपको जीवन में किसी चीज़ की कमी है, तो आपको चाहिए कि उसे आज ही दूर करें। इसे दूर करने में देरी न करें। आज ही कार्य करें।

प्रवचन नोट्स

यह पाठ पिताओं की ओर ढल जाता है। विद्रोही मन के परिणामों को दिखाने के लिए आप इस समग्री को जवान लोगों की ओर ढाल सकते हैं।

दाऊद के जीवन को ''पिताओं द्वारा की जाने वाली गलतियां'' पर प्रचार करने के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है। विलियम एस. बोनोव्स्की, ''थ्री फादर्स हु फेल्ड'' (*द न्यू जनरेशन* [ऑस्टिन, टैज़्सस: स्वीट पज़्लिशिंग कं., 1969], 33-45)।

अहीतोपेल के छल से दाऊद को भजन संहिता 41:9 और भजन संहिता 55:12-14 लिखने की प्रेरणा मिली होगी। ये ''जब कोई मित्र हमें धोखा देता है'' पर पाठ का आधार हो सकते हैं।

भजन संहिता से पूर्व नोट्स के अनुसार, भ.सं. 3 ''दाऊद का भजन। जब वह अपने पुत्र अबशालोम के सामने से भागा था'' है। इस या अगले पाठ के साथ यह सही रहेगा। भजन संहिता 4 सज़्भवतया भजन संहिता 3 से सज़्बन्धित है (भजन संहिता 3 ''सुबह की प्रार्थना'' है; भजन संहिता 4, ''शाम की प्रार्थना'' है)।

टिप्पणियां

[1]शायद आप को सवा से दो किलो के तौल की कोई चीज़ मिल जाए। जब मैं कहूं, ''भारी है'' तो आप उसे पकड़े रहें। अपने मामले में, मैं अपने गंजे सिर पर एक थैला रखता हूं और कहता हूं, ''यह भारी है। मुझे बोझ उठाने की आदत *नहीं* है न।'' [2]रखेल रानी नहीं होती थी। रखेल का विवाह तो हुआ होता था और उसका

सामाजिक रुतबा होता था, परन्तु वह पत्नी से कम होती थी। उसे ''दूसरे दर्जे की पत्नी'' कहा जा सकता है। [3]2शमूएल 15:16. और भी थीं (2 शमूएल 19:5)। [4]''तामार'' का अर्थ है ''खजूर।'' [5]तुझे नहीं मालूम कि सुन्दर नौजवान अबशालोम के गली में से हर समय कोई मुड़ जाता है? [6]यदि आप किसी से प्रेम करते हैं, तो आप उसके साथ वैसे व्यवहार नहीं करेंगे जैसे अबशालोम ने तामार के साथ किया। सच्चे प्यार और सम्मान को एक दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता। [7]तामार के लिए पति ढूंढुने के लिए राजा के लिए यह आश्वासन देना आवश्यक था कि वह कुआंरी अर्थात ''सही सलामत वस्तु'' थी। [8]योनादाब ''दाऊद के भाई शिमा का बेटा था'' (2 शमूएल 13:3; 1 शमूएल 16:9 भी देखें); अर्थात योनादाब दाऊद का भतीजा और अम्नोन का चचेरा भाई था। [9]दाऊद के योनातन से यह कितना भिन्न है, जिसने ''प्रभु में उसका हाथ मज़बूत किया था।'' एक झूठा मित्र आपको वह सब पाने में सहायता कर सकता है जो आप पाना चाहते हैं, परन्तु उसे इस बात की परवाह नहीं है कि आपके लिए अच्छा क्या है। [10]मुझे यह जान कर आश्चर्य हुआ कि एक राजकुमारी खाना बनाना जानती थी, जबकि यह काम नौकर का था। यहूदी लोग अपने बच्चों को छोटा मोटा काम सिखाने में विश्वास रखते थे।

[11]तामार की पहली दलील मज़बूत थी: परमेश्वर और लोगों की नज़र में ''तेरा यह इरादा ठीक नहीं है।'' उसकी अगली दो दलीलें: ''मेरे साथ-साथ तू भी बर्बाद हो जाएगा'' भी मज़बूत थीं। उसकी तीसरी दलील कि दाऊद उसे उसकी पत्नी होने के लिए दे देगा, इतनी मज़बूत नहीं थी क्योंकि व्यवस्था में ऐसा करने की अनुमति नहीं थी (लैव्यव्यवस्था 18:9,11; 20:17; व्यवस्थाविवरण 27:22)। एक के बाद एक दलील से लगता है कि वह ऐसे आदमी को समझाने का प्रयास कर रही थी जो किसी की दलील को मानने को तैयार नहीं था। पहली दलील के सम्बन्ध में, ध्यान दें कि परमेश्वर के लोगों का स्टैंडर्ड दूसरों से ऊपर होना आवश्यक है: ''इस्राएल में ऐसा काम नहीं होना चाहिए'' (13:12)। सम्भवतया ऐसा काम उनके आस पास रहने वाले अन्यजातियों में होता होगा। [12]इस पर सुन्दर कढ़ाई की गई होगी। [13]उसने अपने सिर पर राख भी डाली (2 शमूएल 13:19) और सिर पर हाथ रखा (आयत 19; देखें यिरमियाह 2:37), दोनों ही शोक का प्रतीक थे। [14]सप्तति तथा कई तथा कई संस्करणों में 2 शमूएल 13:21 के अंत जोड़ा गया है: ''और उसने अपने पुत्र अम्नोन का मन दुखी न किया, क्योंकि वह उससे प्रीति रखता था, क्योंकि वह उसका पहलौठा था'' (देखें NEB)। [15]सही सही स्थिति मालूम नहीं है। कुछ लोगों का मत है कि यह यरूशलेम से बारह मील उज़र की ओर था। [16]1 शमूएल 25 में नाबाल और दाऊद की कहानी याद करें। [17]सप्तति और अन्य संस्करणों में 2 शमूएल 13:27 के अंत में जोड़ा गया है: ''और अबशालोम में एक राजा की दावत की तरह, एक दावत तैयार की'' (देखें NEB)। [18]NASB में ''आग्रह किया'' है, साथ में यह टिप्पणी है: ''Lit., *broke through.*'' अबशालोम ने दाऊद की रक्षा में सेंध लगा दी। [19]वे खच्चरों पर भाग गए। यह दाऊद के राज्य में शाही लोगों के लिए सामान्य पहाड़ था (2 शमूएल 18:9; 1 राजा 1:33, 38, 44)। [20]दूसरा शमूएल 13:37ख कहता है: ''और दाऊद अपने पुत्र के लिए दिन रात विलाप करता रहा।'' ''पुत्र'' सम्भवतया अम्नोन को कहा गया है (आयत 39 के अंत पर ध्यान दें)।

[21]गशूर इस्राएल और सीरिया के बीच, गिलाद के उज़र में एक छोटा सा राज्य था (2 शमूएल 3:3; 15:8)। परन्तु यह उस इलाके में था जहां दाऊद का शासन था। दाऊद को अपने पुत्र के पीछे जाकर उसे वापस लाने, उसे दण्ड देने या कुछ और करने में कोई बाधा नहीं थी। [22]अगले अध्याय की आयत 1 पर ध्यान दें (2 शमूएल 14:1)। [23]अबशालोम तीसरा बेटा था, परन्तु क्योंकि दूसरे जन्मे किलाब (2 शमूएल 3:3) या दानिय्येल (1 इतिहास 3:1) का कहीं और उल्लेख नहीं है, इसलिए बहुत से लोगों का मत है कि उसे कुछ हो गया होगा (शायद पैदा होते ही मर गया), जिस कारण अबशालोम राजा का सबसे बड़ा जीवित बेटा था। [24]योआब ऐसा करने में कुछ अधिक ही आगे बढ़ गया। यद्यपि ऊरिय्याह की मृत्यु का जिम्मेदार वह दाऊद को मानता था, परन्तु स्पष्टतया वह इसके परिणाम के अपने पक्ष में न होने तक घबराया हुआ था। 2 शमूएल 14:22 में उसे मिली राहत पर ध्यान दें। [25]यह स्त्री बैतलहम से कुछ मील दक्षिण की ओर तको नामक नगर की थी (नोट आमोस 1:1)। [26]यह नातान की भेड़ के मेमने वाली कहानी से अधिक जटिल थी। इसमें एक ओर तो व्यवस्था की आज्ञा ''आंख के बदले आंख'' थी, परन्तु दूसरी ओर परमेश्वर की इच्छा किभूमि इसके असली मालिकों के पास रहे। स्त्री के कहने का अर्थ था कि परिवार के बाकी लोगों का ध्यान न्याय करने के बजाय

उसकी सज़्पज़ि हड़पने में था। उसकी बात का अर्थ यह था कि उसके पुत्र का जो उसका इकलौता वारिस था जीवित रहना विरासत पाने के लिए आवश्यक था। इसका संकेत यह था कि दाऊद को भी इस्राएल के सिंहासन के वारिस अबशालोम को क्षमा कर देना चाहिए। 2 शमूएल 14:14 के अंत में उसका कथन इस बात की पुष्टि है कि परमेश्वर का स्वभाव दयालु होना है। [27]अबशालोम दाऊद के विकल्पों को समझता था। [28]अमेरिका में व्यवसायिक खिलाड़ी जिन्हें इस्तेमाल नहीं किया जाता कभी कभी धमकी देते हैं ''मुझे खिलाओ या सौदा करो।'' [29]योआब ने सोचा होगा कि उसने पहले भी अपनी किस्मत को धज़्का मार दिया था। [30]मैं ऐसे बच्चों को जानता हूं जो ध्यान आकर्षित करने के लिए गलत काम करते हैं; आप भी जानते होंगे।

[31]2 शमूएल 15:6, 12. जब कोई देश के लिए किए गए दाऊद के सब कामों पर विचार करता है (''बिना नीचे ठोकर मारे शिखर पर कैसे पहुंचें'' पर पाठ देखें), तो यह हैरान करने वाला लगता है कि अबशालोम के लिए ऐसा करना सज़्भव था। केवल यही निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि बतशेबा के साथ दाऊद के सज़्बन्ध के बाद उसका पहले वाला सज़्मान नहीं रहा था। [32]दूसरा शमूएल 15:7 में ''चार वर्ष'' है परन्तु नीचे टिप्पणी में ''चालीस'' लिखा गया है। कुछ प्राचीन संस्करणों में तथा जोसेफस की पुस्तक में ''चार'' ही है। सज़्भवतया यही अधिक सही संज़्या है (NASB तथा NIV के फुटनोट देखें)। परन्तु कुछ लोगों का मत है कि चालीस वर्ष किसी और घटना की बात है, शायद शमूएल द्वारा दाऊद को अभिषेक करने के चालीस वर्ष से। [33]जहां तक बाइबल बतातीा है, अबशालोम रथ और घोड़ों का इस्तेमाल करने वाला शाही परिवार का पहला आदमी था। शमूएल ने चेतावनी दी थी कि ऐसा होगा (1 शमूएल 8:11)। [34]2 शमूएल 18:18. शाऊल ने पहले यही काम किया था (1 शमूएल 15:12)। हम पज़्का नहीं जानते कि ''राजा की तराई'' कहां थी। सज़्भवतया यह यरूशलेम के निकट थी। [35]अबशालोम ने कहा, कि इसका उद्देश्य अपने नाम की यादगार कायम रखना था। परन्तु ज़्योंकि उसने यह अपने जीवन काल में किया, इसलिए इसका तुरन्त परिणाम अपनी प्रसिद्धि था। यह बोर्ड लगाने के तुल्य प्राचीन होगा। आयत पर ध्यान दें, ''कोई पुत्र मेरे नहीं है'' (2 शमूएल 18:18)। अबशालोम के पुत्रों का उल्लेख पहले किया गया है (2 शमूएल 14:27); स्पष्टतया सभी जन्म के समय या कुछ देर के बाद मर गए। [36]दाऊद के लिए अबशालोम के कम से कम कुछ कार्यों का ज्ञान न होना कठिन था ... पर फिर भी दाऊद ने कुछ नहीं किया। [37]मन्दिर बनने से पहले तक ''ऊंचे स्थानों'' पर बलिदान करने की अनुमति थी। ज़्योंकि अबशालोम का जन्म हेब्रोन में हुआ था, इसलिए सज़्भवतया उसके लिए वहां जाकर बलिदान करना तर्कसंगत जगह लगी। [38]अपने वास्तविक उद्देश्यों को छुपाने के लिए धर्म का सहारा लेने वाला अबशालोम पहला या अंतिम व्यज़्ति नहीं था। हेब्रोन में पहुंचने के बाद, उसने राजद्रोह जारी रखा (2 शमूएल 15:12) जबकि उसका षड्यन्त्र बढ़ रहा था। [39]पहली एक यात्रा के सज़्बन्ध में अपनी इच्छाओं के बारे में अबशालोम ने झूठ बोला था (2 शमूएल 13:23-27), परन्तु शायद दाऊद को वह याद नहीं था। [40]दूसरा शमूएल 15:10 कहता है कि यह होना ही था; आयत 13 से संकेत मिलता है कि यह हुआ। 2 शमूएल 19:10 कहता है कि उन्होंने अबशालोम का राजा के रूप में ''अभिषेक किया,'' सो राज्याभिषेक का कोई न कोई समारोह अवश्य था।

[41]2 शमूएल 15:12. यहां हम पहली बार अहीतोपेल के बारे में पढ़ते हैं, परन्तु स्पष्टतया दाऊद बिना किया संदेह के उसकी सलाह पर भरोसा करता था (आयत 31)। अहीतोपेल स्पष्टतया बतशेबा का दादा था (2 शमूएल 11:3 के साथ 23:34 रखें)। शायद अहीतोपेल ने बतशेबा और ऊरिय्याह के साथ दाऊद की कार्य का बदला लिया। [42]कुछ लोग नगर छोड़ने के दाऊद के निर्णय को एक सूझ-बूझ वाली सैनिक चाल मानते हैं। शायद, परन्तु यह तथ्य रह जाता है कि अपने जीवन में यहां पर, दाऊद ने सकारात्मक कार्य आरज़्भ करने के बजाय जो हुआ उस पर प्रतिक्रया की। [43]ध्यान दें कि जब शेबा ने बाद में एक विद्रोह में अगुआई की और ''सब इस्राएली ... शेबा के पीछे हो लिए,'' तो दाऊद नगर से भागा नहीं था (2 शमूएल 20:2)। [44]''पूरा इस्राएल सुनेगा कि तू ने अपने आप को अपने पिता के लिए घृणाजनक बना लिया है'' शज़्दों के पीछे यही विचार है। कुछ लोग सज़्भवतया डरते हैं कि अबशालोम अपने पिता के साथ मिल पाया (जैसे अतीत में); फिर षड्यन्त्र में भाग लेने के लिए उन्हें दण्ड दिया गया। दाऊद की रखेलों के पास जाकर अबशालोम ने दिखा दिया कि कोई सुलह नहीं होगी। [45]वे अबशालोम के कार्यों के लिए राजनैतिक वरीयता हो सकते हैं, परन्तु जो कुछ उसने किया वह

व्यवस्था के विरुद्ध था (लैव्यव्यवस्था 18:7, 8; 20:11)। [46]एक और पुत्र ने बाद में विद्रोह किया, परन्तु उसने इस समय नहीं किया। [47]भजन संहिता 103:13क में दाऊद के शज़्दों में ध्यान दें। [48]''परमेश्वर की ताड़ना को खुशी से मानना'' पाठ में ''एप्रैम के जंगल'' वाज़्यांश पर ध्यान दें। [49]जोसेफस ने एक पद्य लिखा कि अबशालोम के बाल किस प्रकार टहनियों में फंस गए थे। [50]यह भी सुझाव दिया गया है कि जब उसका सिर पेड़ की लकड़ी में फंस गया तो वह बेहोश हो गया और उसने अपने आप को छुड़ाने का कोई प्रयास न किया।

[51]''हृदय'' (2 शमूएल 18:14) लहू को पज़्प करने वाली मांसपेशी को नहीं बल्कि अबशालोम के शरीर के ''केन्द्र'' को कहा गया होगा। हमने पीड़ित के पेट में तलवार मारे जाने के कई उदाहरण देखें है। [52]कल्पना करें कि अबशालोम और दाऊद आपके दोनों और खड़े हैं, और इस बात का संकेत दोनों ओर एक एक हाथ करके करें।